IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रेष्ठ भारत निर्माण में शास्त्रोक्त न्याय संदर्श

नीलिमा [1] 'शोद्यार्थी, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय,

डॉ .बृजलता शर्मा [2] 'प्रोफेसर, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय ,

प्रस्तावना –

किसी भी राष्ट्र के चंहुमुखी विकास से लेकर अपनी स्वयं की जगह पर उन्नतशील कार्य करने वाले सहायक दल बनाने में अति आवश्यक अनिवार्यता किस भाव की है – **आत्मीयता** । अनिवार्यता तो अनेक विचारों की होती है परंतु आत्मीयता के विशेष होने का कारण है – जो प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान है अर्थात आत्मा। आत्मीयता की उत्पत्ति वास्तव में आत्मा से हुई है। यहाँ आत्मा अर्थात जो तत्त्व सभी में विद्यमान है। यहाँ आत्मा के वैज्ञानिक अर्थ को हम नहीं ले रहे हैं।

अतः श्रेष्ठ भारत निर्माण में हम स्वार्थ के कारण नहीं अपितु आत्मीयता के भाव के कारण, उसके प्रत्यक्ष आश्रित व्यवहारिक समानताओं को देखते हुए आगे बढ़े। किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने में सहायक सिद्ध यह तत्त्व समानता के साथ साथ कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य करने की उद्देश्यपूर्ति में एक तरफ आत्मीयता से तो दूसरी तरफ समन्वय से जुड़ी होती है। सभी में सहयोगिता व सहभागिता का उन्नतिशील सुव्यवस्था रूपी जो गुण है , वह भी आत्मीयता का ही एक स्वरूप है। ठीक है इसके दूसरे पहलू पर यदि हम विचार करें तो इन सभी गुणों की कमी के कारण कई प्रकार की समस्याएं समाज में उत्पन्न होती रहती हैं।

बहुत ही विचारणीय प्रश्न है, किसी भी देश में रहने वाले सभी व्यक्तियों को उसका उत्तर जानना अति आवश्यक है कि किसी भी देश या राष्ट्र का भाग्य उदय किसके प्रयासों से होता है?

- **क्या उस राष्ट्र के नेता, अवतार, सरकार, नीति-निर्माताओं इत्यादि?** वास्तव में इनके सहारे से श्रेष्ठ निर्माण संभव नहीं होता, वह केवल मात्र सहायक ही होते हैं । समय-समय पर अलग-अलग प्रकार की समयानुसार सत्ता-व्यवस्था और नेता का समाज में होना बिल्कुल आवश्यक रहता है ।
- **इसी प्रश्न के उत्तर को ढूंढते हुए एक प्रश्न और सामने आता है कि उचित प्रकार की भविष्योन्मुखी व्यवस्था,सत्ता और नेतृत्व लाने वाला वह ऐसा कौन सा महत्त्वपूर्ण कारक है ?** यह एक सोचने का विषय है; इसका उत्तर है- समाज अर्थात समाज के पुरुषार्थ के बिना भाग्य का उदय होना संभव ही नहीं है।
- समाज के पुरुषार्थ शक्ति के कारण ही किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ राष्ट्र बनाना संभव है। किसी भी राष्ट्र का भाग्य उदय वास्तव में वहां रहने वाले निवासियों के द्वारा ही संभव है, उनकी जागृत प्रवृत्ति और पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ निर्माण की ओर राष्ट्र को अग्रसर करता है।
- **इसी प्रक्रिया में एक प्रश्न और आता है कि महापुरुषों का जन्म किस प्रकार होता है, क्या वह पैदा होते ही महानता का परिचय समाज में स्थापित कर देते हैं?** तो उसका उत्तर है कि वास्तव में समाज से ही महापुरुषों का जन्म होता है। जो विषम से विषम परिस्थितियों में संघर्ष को चुनकर अपने जीवन को समाज के लिए समर्पित करते हुए ,अनेक प्रकार के प्रयोगों को अंजाम देते हुए अंत में एक महान आत्मा के रूप में अपने आप को समाज में स्थापित करता है।
- **जिस पुरुषार्थ की हम बात कर रहे हैं उस को जागृत करने के लिए ऐसा कौन सा सिद्धांत है, जिसके बिना श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण की कल्पना असंभव है अतः प्रश्न बहुत ही गुढ़ है कि पुरुषार्थ में महत्त्वपूर्ण तत्व क्या है?** जिसका उत्तर सुनने में देखने में तो बहुत सरल रखता है परंतु एकमात्र इसी सिद्धांत को समाज में प्रसारित करके ही समाज का लाभ कोई भी राष्ट्र उठा पाता है। अतः समाज के पुरुषार्थ में एकता का महत्त्व बहुत अधिक है । समाज का पुरुषार्थ यानी एक व्यक्ति के पुरुषार्थ के कारण ऐसा कठिन कार्य संपन्न होना संभव नहीं है,

इसीलिए सभी व्यक्ति जो समाज का अंग है। सब व्यक्तियों से मिलकर जो समाज बना है जो वास्तव में केवल मात्र मनुष्यों का समूह नहीं बल्कि एक ऐसा समूह आत्मीयता के कारण से जुड़ा हुआ है; इस आत्मीयता का जो मुख्य आधार है, वह जो सब में विद्यमान है; जीवन का तत्त्व (आत्मीयता) उसके बिना समाज एकजुट नहीं होता।

स्व. श्री नानी पालखीवाला की पुस्तक- " We the people" जब यह पुस्तक प्रकाशित हुई तब तक हमारे देश में 7 या 9 पंचवर्षीय योजनाएं पूर्ण हो चुकी थी **।** परंतु देश की स्थिति जस की तस थी **।** ऐसे कौन से प्रयास थे, जिनके कारण देश की स्थिति नहीं बदल सकी, योजना पूर्ण भी हो गई, ढेर सारा पैसा भी खर्च हो गया ,परंतु स्थिति पूर्ववत ही थी, ऐसा क्यों?

लेखक ने अपने उत्तर में लिखा इसका कारण – हमने समाज के पुरुषार्थ को नहीं जगाया , क्योंकि लोगों की इच्छा शक्ति को जगाने के बाद ही, हम श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

अब्राहम लिंकन- " A divided house can not stand " राष्ट्रीय पुरुषार्थ के आधार पर राष्ट्र का सम्मान, राष्ट्र की सुस्थिति, राष्ट्र के सब अंगों की समृद्धि और राष्ट्र की दुनिया में प्रतिष्ठा खड़ी होती है। उस राष्ट्र के पुरुषार्थ को राष्ट्र की एकता के बिना यानि राष्ट्र में राष्ट्र को अपना मानने वाले समाज की एकता के बिना साधा नहीं जा सकता **।**

मूल शब्द– { श्रेष्ठ , राष्ट्र , भारत , निर्माण, श्रीमद्भगवद्गीता, पायदान, न्याय, नैतिक , मूल्य, संदर्श, शास्त्रोक्त **।}**

श्रेष्ठ भारत निर्माण में शास्त्रोक्त न्याय संदर्श–

न्याय शास्त्र के रचनाकार ऋषि अक्षपाद गौतम जिनके द्वारा रचित यह न्यायशास्त्र विश्व में अत्यधिक प्रसिद्ध है। इस न्यायशास्त्र को रचने के पीछे मुख्य कारण- सभी प्रकार के दुखों से छुटकारा पाने वाले इस भाव से ही इस शास्त्र का उदय हुआ।

"दुःख जन्मप्रवृतिदोष मिथ्याज्ञाना मुत्तरोतत्रापाए तदनत्रा पायादप वर्गः। (न्या. सू. । अ । आ । सूत्र 2)

तात्पर्य– दुख, जन्म से प्राप्त दोषपूर्ण प्रवृत्ति, विद्या ज्ञान अभाव और मिथ्या ज्ञान वश जो समस्या व दोष उत्पन्न होते हैं उन सबके निवारणार्थ तत्पश्चात् मोक्ष, न्यायशास्त्र द्वारा ही संभव है और न्यायशास्त्र के अनुसार जिन पदार्थों के तत्त्व ज्ञान से मोक्ष अथवा अपराधिक, अवैधानिक घटनाओं का निवारण भी होता है।

राष्ट्र निर्माण में स्थिरता व सुदृढ़ता की स्थिति–

आचार्य विष्णु गुप्त द्वारा रचित कौटिल्य अर्थशास्त्र में राष्ट्र की स्थिरता व सुदृढ़ता हेतु सभी नियमों व सूत्रों को वर्तमान समय में भी सक्रिय रूप से उपयोग में लाया जाता है, इस तथ्य से सभी भलीभांति परिचित हैं **।** चाणक्य ने इस ग्रंथ में ऐसे सभी पहलू जो समाज व राष्ट्र के श्रेष्ठतम, उच्चतम पायदान पर पहुंचने के लिए सहायक सिद्ध है उन्होंने अपनी नीति सूत्रों में सभी को वर्णित किया है; साथ ही साथ जो दुष्ट प्रवृत्ति के लोग हैं, उनके लिए भी उपचार नीति का विवरण विस्तृत रूप से किया है। चाणक्य का मानना है कि राष्ट्र की अस्मिता, आत्मगौरव को क्षति पहुंचाने वाली दुष्ट प्रवृत्ति तत्वों का पूर्णतया नष्ट होना अनिवार्य है। वेदों में वर्णित क्लिष्ट मंत्रों की शिक्षा को चाणक्य ने भविष्य में आने वाली युवा शक्ति के लिए अत्यंत सरल श्लोकों एवं सूत्रों के माध्यम से लोक कल्याण हेतु प्रस्तुत किया है।

देश के आत्म-गौरव और आत्म-स्वाभिमान को अखंड बनाए रखने के लिए हम सभी का नैतिक कर्तव्य बनता है कि राष्ट्र की एकता एवं संगठन के विचार को प्रत्येक जनमानस के अंतर्मन में अंकुरण करने का हरसंभव प्रयास करें। जो श्रेष्ठ भारत निर्माण के लिए अति आवश्यक है **।**

चाणक्य विचार– राष्ट्रीय एकता राष्ट्र रूपी शरीर में आत्मा के समान है ; जिस प्रकार आत्माहीन शरीर प्रयोजन हीन हो जाता है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्र भी एकता एवं संगठन के अभाव में टूट जाता है।

चाणक्य के विचारों को समाज में प्रसारित किये बिना न्याय व्यवस्था और श्रेष्ठ राष्ट्र की निर्माण की कल्पना करना अतिशयोक्ति पूर्ण है क्योंकि चाणक्य के विचार वेदों में वर्णित न्याय संहिता का ही सार है; अर्थात उनके द्वारा बताए गए विचारों को यदि कोई भी राष्ट्र और उसमें रहने वाले लोग अनुकरण करने लगें हैं तो श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण पूर्णतया संभव है। जो राष्ट्र को नुकसान पहुंचाते हैं ,उनका समूल नाश कर देना ही उचित है। अतः किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने में उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है।

चाणक्य के अनुसार -- देश में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र निर्माण के प्रति सदैव समर्पण की भावना रखना ही सच्ची राष्ट्र सेवा है।

अतः देश के निवासियों द्वारा किया गया व्यवहार राष्ट्रीय विकास के स्तरों पर कहीं ना कहीं प्रकाश डालता है। ठीक उसी प्रकार जैसे एक परिवार के संस्कारों में नैतिक मूल्यों और न्यायिक स्तर को जानना हो , तो उस परिवार के किसी भी सदस्य के व्यक्तित्व में विद्यमान गुणों से परिवार के संस्कारों का पता भी लगाया जा सकता है। यही बात किसी भी राष्ट्र के वास्तविक स्थिति को जानने के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। यदि वास्तविकता पता करनी हो तो निवासियों के व्यवहार से पता लगाया जा सकता है क्योंकि वंहा के निवासियों द्वारा संचालित मानव मूल्योपरक वचनबद्धता , संवेदनाओं को व्यक्त करने वाले आचार-विचार, रहन-सहन ,खान-पान और जीवनशैली का महत्त्वपूर्ण योगदान सदैव श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण हेतु निमित्त रहता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर जारी रहता है।

श्रेष्ठ आचरण के महत्त्व को उद्घाटित करते हुए श्रीमद्भगवद्गीता गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः , स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥(गीता 3/21)

तात्पर्य-

श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा किया गया आचरण भविष्य में आने वाली पीढ़ी अपने आचरण में अपनाती है अर्थात जो प्रमाण, मर्यादा,आदर्श युक्त कर्म श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा लोकहित में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किए जाते हैं , समस्त मानव समुदाय उसी का अनुसरण करने लग जाता है।

जब समस्त मानव समुदाय श्रेष्ठ व आदर्श युक्त कर्मों को अपने जीवन में अपना लेता है तो श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण पूर्णतया सफल हो जाता है। अतः श्रेष्ठ व्यक्ति का व्यक्तित्व किस प्रकार प्रथम पायदान से अंतिम पायदान तक अपनी उपयोगिता को अंकित करता है।यह हम निम्नलिखित श्रंखला पायदानों के द्वारा समझ सकते हैं । किस प्रकार एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हुए सराहनीय भूमिका निभाता है। यह पायदान यात्रा वास्तव में श्रेष्ठ व्यक्ति से आरंभ होकर श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण तक की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण तथ्यों को अलग-अलग स्तर पर सकारात्मक प्रभाव को प्रकाशित-प्रसारित करती है-

श्रेष्ठ पुरुष (व्यक्ति) →श्रेष्ठ परिवार→श्रेष्ठ समाज →श्रेष्ठ राज्य →श्रेष्ठ राष्ट्र ।

अतः उपरोक्त महत्त्वपूर्ण तथ्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक श्रेष्ठ निर्माणाधीन स्वचालित प्रक्रिया के अंतर्गत अन्नतभविष्य तक स्वचालित होनेवाली एक सतत् प्रक्रिया रहती है। जिसके परिणाम स्वरूप श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण संभव होता है।

हमारा विषय " श्रेष्ठ भारत निर्माण में शास्त्रोक्त न्याय संदर्श" राष्ट्र निर्माण हेतु शास्त्रों में वर्णित न्यायिक शिक्षाओं के सहयोग की झलक हमें वर्तमान में भी दिखाई देती है।

वर्तमान श्रेष्ठ भारत निर्माण में सहायक योजनाएं - किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने में अनेक प्रकार के प्रयास सम्मिलित होते हैं, ठीक उसी प्रकार श्रेष्ठ भारत के निर्माण में भी वर्तमान सरकार द्वारा किए जा रहे अनेक प्रयासों में से एक महत्त्वपूर्ण प्रयास के अंतर्गत "एक भारत श्रेष्ठ भारत" नामक योजना लागू की गई है। जिसका शुभारंभ **31** अक्टूबर **2015** को सरदार वल्लभ भाई पटेल के **140** वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कर-कमलों द्वारा किया गया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई । उन्होंने एक स्वतन्त्रता सेनानी के साथ-साथ उपप्रधान मंत्री और गृह मंत्री के रूप में भी सफलता पूर्वक कार्य किया। इनका पूरा जीवन भारत को एकता सूत्र में बांधने में प्रयत्नशील रहा तथा लोककल्याण हेतु नेतृत्व और भविष्योन्मुखी मानव मूल्यों को स्थापित करने में सदैव अग्रणी रहा। अपने विचारों से भारत को लाभान्वित करने में सफल प्रयासों के फलस्वरूप लौह पुरुष एवं सरदार जैसे सम्मान भी समाज में प्राप्त किये। भारत को एक गणतंत्र बनाने में सरदार वल्लभभाई पटेल की अहम भूमिका रही।वकालत का अध्ययन करने वाले पटेल जी न्याय संगत विचारों को समाज में प्रसारित करने में सदैव निमित्त बने रहे।

"एक भारत श्रेष्ठ भारत"

यह एक ऐसी प्रभावशाली योजना है, जिसमें भारत सरकार का मूल उद्देश्य वर्तमान में सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से देश के अलग-अलग भागों में एकता के भाव को बढ़ावा देना, साथ ही उन भारतीयों के बीच भी संबंधों को सुधारना है जो पूरे देश में अलग-अलग भागों में रह रहे हैं।

- एक भारत श्रेष्ठ भारत के लिए सभी राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

- विद्यालयों में एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित होने वाली गतिविधियों के लिए दिशा-निर्देश के साथ-साथ प्रस्तावित कैलेंडर आदि की सुविधा प्रदान करना।

वास्तव में हमारा भारत देश एक ऐसी संस्कृति और विरासत को अपने आप में संजोए हुए हैं जो पूरे संसार में सबसे अनूठी है। इस विविधता और संस्कृति की विरासत के समृद्ध रूप को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा अनेक प्रकार की श्रेष्ठ योजनाओं को क्रियान्वित करने के साथ-साथ प्राचीन शास्त्रों में वर्णित मानव विकास से संबंधित विषयों पर भी ध्यान में रखते हुए अनेकानेक प्रयास वर्तमान सरकार द्वारा किए जा रहे हैं। उनमें से ही एक **31** अक्टूबर **2015** को **"** एक भारत श्रेष्ठ भारत**"** नामक योजना को आरंभ किया गया।

वर्तमान समय में श्रेष्ठ भारत निर्माण में उपयोगी कुछ सुझावों पर विचार –

- सांस्कृतिक व शिक्षा नीतियों में शास्त्रोचित कार्यक्रमों को प्रयोगात्मक व उदाहरण सहित प्रस्तुत करने पर शिक्षा प्रणाली में अधिक बल दिया जाना चाहिए।
- एक राज्य से दूसरे राज्य में कार्यक्रमों का आयोजन में नेतृत्व करना**,** जिससे क्षेत्रीय संस्कृति का ज्ञान एक दूसरे को प्राप्त होगा एक दूसरे के भावों को समझने और विकास की ओर ले जाने में सहायता मिलेगी।
- समाज में एक **-** दूसरे को अपने अनुभवी विचारों से प्रमाणिकता आधार पर शिक्षित करना **|**
- प्राचीन साहित्य पर आधारित शिक्षाओं से ओत-प्रोत होने वाली कथाओं का ज्यादा से ज्यादा शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रयोग करते हुए **,**सामूहिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना वह वर्तमान पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना।
- सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग करना**,**
- समान उद्देश्य पूर्ति वाले संगठनों के साथ भागीदारी को बढ़ावा देना**,**
- उच्च शिक्षा संस्थानों में आलोचनात्मक शोध और आत्म चिंतन के भाव को प्रोत्साहित करना ताकि उचित मूल्यांकन हो सके।
- अतीत**,** वर्तमान और भविष्य के दृष्टिकोणों में सही मूल्यांकन करने के वातावरण को बढ़ावा देना।
- शोध विषयों में ज्यादा से ज्यादा प्राचीन शास्त्रों में वर्णित साहित्यिक विषयों को प्रोत्साहन देना।
- प्राचीन शास्त्रों की शिक्षा और वर्तमान साहित्य से समाज में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने में सहायक सिद्ध कदम प्रमाणिकता आधारित उठाने चाहिए। जिसमें समय-समय पर सरकार का हस्तक्षेप निष्पक्ष रूप से उत्तरदाई होना चाहिए।
- आदर्श व्यक्तित्वों द्वारा प्रेरणादायक स्रोतों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए।
- सामुदायिक सेवा तथा स्थानीय कार्यक्रमों व गतिविधियों के आयोजन में वृद्धि करना।
- नैतिक व न्याय हेतु मूल्यों को बढ़ावा देने वाली नीतियों एवं कानूनों का पक्ष रखना।
- कला**,** संस्कृति और साहित्य संबंधी शोध कार्य को पूर्ण अवसर प्रदान करने पर गहनता से विचार करने की आवश्यकता है।
- पारिवारिक स्तर पर धार्मिक-सांस्कृतिक मूल्यों में विश्वास की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में सहायक कदम उठाने की जरूरत है।
- प्राचीन कालीन गूढ़ रहस्यमयी ज्ञान का वर्तमान समय में समन्वय स्थापित करने में सहायक भूमिका निभाना।

न्याय व मानव मूल्य से ओतप्रोत नैतिकता पूर्ण व्यवहार को समाज में किस प्रकार प्रसारित करें तथा प्राचीन साहित्य में वर्णित श्रेष्ठ समाज और श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्धांत का अध्ययन **,**इस शोध पत्र के माध्यम से उजागर करने का एक छोटा-सा प्रयास।

श्रेष्ठ भारत निर्माण और शास्त्रों के संबंध को अध्ययन करने वाले कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण तथ्य, जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता है क्योंकि किसी भी राष्ट्र के विकास में सकारात्मक विचारों से प्रभावित साहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम भारतीयों को तो यह अनमोल धरोहर हजारों वर्षों पहले से ही प्राप्त है। हमारी शास्त्रोक्त न्याय व्यवस्था मात्र भारत में ही नहीं अपितु सभी राष्ट्रों के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

साहित्य**(** हित सहित **)** मनुष्य की प्रवृत्ति से ही उदित हुआ एक ऐसा रचना धर्मी आयाम **,** जो मानसिक स्तर पर उभरे शब्दों के चित्रात्मक स्वरूप को समाज कल्याण हेतु**,** मानव मूल्यों की स्थापना को केंद्र में स्थित करते हुए प्रतिदिन कर्मों द्वारा प्रदर्शित होते हैं। श्रेष्ठ भारत निर्माण हेतु हमारे प्राचीन शास्त्रों में वेद**,** उपनिषद**,** अरण्यक**,** पुराण **,** श्रीमद्भगवद्गीता **,** चाणक्य नीति शास्त्र इत्यादि संस्कृतिक धरोहर अनमोल पथ प्रदर्शक के रूप में विद्यमान है।

श्रेष्ठ भारत निर्माण में न्याय और मानव मूल्यों को स्थापित करने हेतु बहुत से उपाय अनेक शास्त्रों में वर्णित है **|**

जिसमें आज घटित होने वाले सामाजिक परिवर्तन को पहले ही उल्लेखित कर दिया गया था। आने वाले संघर्षों से पहले ही अवगत कराते हुए उन सभी परिस्थितियों में किस प्रकार हम अपना आचरण-व्यवहार करे अर्थात जीवन मूल्यों को धारण करने के साथ-साथ समाधान भी प्रस्तुत करने के माध्यम पर भी गहनता से प्रकाश डाला गया है।

प्रयोगात्मक शैली शास्त्रों में है श्री विष्णु गुप्त जी द्वारा रचित कौटिल्य अर्थशास्त्र ,चाणक्य नीति शास्त्र; इसमें सभी तथ्य समाज में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने में सहायक सिद्ध होते हैं, आचार्य चाणक्य द्वारा प्रमाणिक उदाहरणों के साथ-साथ समस्याओं के समाधान भी प्रसारित किए गए हैं । समाज और राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने में एक श्लोक द्वारा समझाया गया गूढ़ रहस्य, जिसे समझने का प्रयत्न सभी मनुष्यों को चुनौती, समाधान और अवसर की न्यायिक दृष्टि से करना चाहिए –

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् , ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।। (चाणक्य नीति 3अध्याय,10श्लोक)

तात्पर्य - कुल के हित के लिए एक व्यक्ति का यदि त्याग करना पड़ता है तो वह कर देना चाहिए, गांव के हित के लिए यदि आवश्यकता पड़ती है तो कुल का त्याग कर देना चाहिए, देश के हित में यदि गांव का त्याग करना पड़ता है तो वह करने में ही राष्ट्र निर्माण हेतु कर देना चाहिए और अन्त में आत्म-कल्याण के लिए पृथ्वी का त्याग करने में देरी नहीं करनी चाहिए चाहिए। अर्थात एक परिवार को बचाने के लिए एक सदस्य का त्याग, एक गांव को बचाने के लिए एक परिवार का त्याग, देश को बचाने के लिए एक गांव का त्याग और खुद को बचाने के लिए देश व उक्त स्थान को छोड़ देना ही राष्ट्र के प्रति प्रेम और श्रेष्ठ भारत निर्माण में शास्त्रोक्त सहभागिता सुनिश्चित करने जैसा है।

ऐसी त्यागमयी एवं व्यवहारिक नैतिक व्यवस्था को समाज में पुनर्स्थापित करने हेतु जन-जन में जागृति लाने की आवश्यकता है ताकि हम श्रेष्ठ भारत के निर्माण में अपनी भागीदारी को अंकित करा सके। अब बात आती है श्रीमद्भागवत पुराण और गीता में निर्दिष्ट न्याय आधारित मूल्यों को धारण करने से श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण में किस प्रकार सहयोगी है। उसके लिए सबसे पहले हमें यह जानना जरूरी है कि शास्त्रों में आज (वर्तमान समय) के लिए क्या-क्या भविष्यवाणियां पहले ही कर दी गई थी और जब उन समस्याओं को पहले ही भविष्यवाणी के रूप में बता दिया गया था तो साथ ही साथ समाधान भी वर्णित किए गए थे। केवल और केवल आवश्यकता यदि है तो उस समाधान पद्धति को वर्तमान दैनिक जीवन शैली और शिक्षा और शैक्षणिक संस्थानों के अंदर प्रसारित कर, अपने में अंगीकार करते हुए मनुष्य को अपना जीवन जीने की।

ऐसी जीवन पद्धति "जो मृत्यु के पश्चात भी मनुष्य को जीवित रखती है, यह केवल प्राचीन भारतीय सनातन शास्त्रों में वर्णित की गई है।" मृत्यु उपरांत भी उपरोक्त वर्णित जीवन किस प्रकार संभव है ? क्या उस मार्ग को प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अपनाते हुए, इस मानव जीवन की सार्थकता को सिद्ध कर सकता है?

अतः ऐसा महत्त्वपूर्ण व अलौकिक ज्ञान का भंडार सनातन शास्त्रों में श्रेष्ठ मानव-कल्याण विकास की अवधारणा को प्रकाशित करता है। यह अवधारणा अनंत काल तक प्रासंगिकता सिद्धि को प्राप्त करने वाले निस्वार्थ और त्यागमयी कर्म मार्ग पर अग्रसर करने का सामर्थ्य रखती है। निस्वार्थ कर्म मार्ग पर चलते हुए मनुष्य का जीवन श्रेष्ठता व सार्थकता सिद्धि प्राप्ति के मार्ग पर चलने के साथ-साथ समाज में मृत्यु के पश्चात भी आदर्श जीवन जीता है।

मृत्यु के पश्चात जीवन जीने से तात्पर्य है कि आने वाली पीढ़ी सदैव अपने आचरण, व्यवहारिक विचारों में अपने महान पूर्वजों के अनुभवों को ही तो अंगीकार करती है।

उपरोक्त पंक्तियों में व्यक्तिगत धारणा के आधार पर स्पष्टीकरण हुआ, परंतु वहीं जब राष्ट्र की बात आती है और उसमें भी जब हम अपने भारत की बात करते हैं तो श्रीमद्भगवद्गीता प्रत्येक परिस्थिति और अनंत काल तक उपयोगी शिक्षाओं को समाज में एक संदेश के रूप में प्रारंभ से ही प्रसारित करती आ रही है । किसी राष्ट्र में रहने वाले लोगों द्वारा अपने जीवन में यदि राष्ट्रहितों को ध्यान में रखकर सुमार्ग को अपनाया जाता है तो वह संपूर्ण संसार में श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में स्थापित अवश्य होता है।

अतः इस शोध पत्र के माध्यम से श्रेष्ठ भारत के निर्माण में शास्त्रोक्त न्यायिक अवस्था की झलक को प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा हैं। न्याय संदर्श में कृत्य और अकृत्य दोनों पक्ष महत्त्वपूर्ण है अतः सर्वप्रथम श्रेष्ठ भारत के निर्माण में भगवत महापुराण के 12वें स्कन्द में ऐसे किन तत्वों को उजागर किया गया है, जिनको हमें अपने आचरण और व्यवहार से दूर करना होगा ताकि श्रेष्ठ भारत निर्माण का मार्ग प्रकाशित हो सके, श्रेष्ठ भारत निर्माण में कोई बाधा नहीं आए ; साथ ही इतने हजारों वर्ष पहले श्रीमद भगवत महापुराण में वर्तमान काल में घटित होने वाली परिस्थितियों की भविष्यवाणी कर दी गई थी।

अद्भुत! हजारों वर्षों पुर्व ही वर्तमान स्थिति को अनुभव करते हुए निम्नलिखित श्लोकों में समाज में व्याप्त स्थिति की भविष्यवाणी –

ततश्चानुदिनं धर्मः सत्यं शौचं क्षमा दया , कालेन बलिना राजन् नङ्क्ष्यत्यायुर्बलं स्मृतिः ॥ (गीता अध्याय **16** श्लोक **3)**भागवत पुराण, स्कंद **12-2,1)**

तात्पर्य - कलियुग में अर्थ, धर्म, सत्यवादिता, स्वच्छता, सहिष्णुता, दया, जीवन की अवधि, शारीरिक शक्ति और स्मृति सभी दिन पर दिन घटती जाएगी.

वित्तमेव कलौ नृणां जन्माचारगुणोदयः , धर्मन्याय व्यवस्थायां कारणं बलमेव हि ॥(भागवत पुराण, स्कंद **12-2,2)**

तात्पर्य - कलियुग में जिस व्यक्ति के पास जितना धन होगा, वो उतना ही गुणी माना जाएगा और कानून, न्याय केवल एक शक्ति के आधार पर ही लागू किया जाएगा.

दाम्पत्येऽभिरुचिर्हेतुः मायैव व्यावहारिके , स्त्रीत्वे पुंस्त्वे च हि रतिः विप्रत्वे सूत्रमेव हि ॥ (श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक ३**)**

तात्पर्य - इस युग में स्त्री-पुरुष बिना विवाह के ही एक दूसरे में रूचि के अनुसार साथ रहेंगे **(**लीव इन रिलेशनशिप - प्रचलित शब्द**)**। वहीं दूसरी ओर व्यापार की सफलता छल पर निर्भर करेगी। कलयुग में ब्राह्मण सिर्फ एक धागा **(**जनेऊ**)** पहनकर ब्राह्मण होने का दावा करेंगे।

लिङ्गं एवाश्रमख्यातौ अन्योन्यापत्ति कारणम् ,अवृत्त्या न्यायदौर्बल्यं पाण्डित्ये चापलं वचः ॥श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक ४**)**

तात्पर्य– इसके अनुसार जो मनुष्य घूस देने या धन खर्च करने में असमर्थ होगा। उसे अदालतों से सही न्याय नहीं मिल सकेगा। साथ ही जो व्यक्ति बहुत चालाक और स्वार्थी होगा वो ही इस युग में बहुत विद्वान माना जाएगा।

क्षुत्तृड्भ्यां व्याधिभिश्चैव संतप्स्यन्ते च चिन्तया , त्रिंशद्विंशति वर्षाणि परमायुः कलौ नृणाम्।। श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक ११ **)**

तात्पर्य - इस युग में लोग भूख-प्यास और कई तरह की चिंताओं से दुखी रहेंगे। कई तरह की बिमारियां उन्हें हर समय घेरे रहेगी। साथ ही कलियुग में मनुष्य की उम्र केवल बीस या तीस वर्ष की ही होगी।

दूरे वार्ययनं तीर्थं लावण्यं केशधारणम् , उदरंभरता स्वार्थः सत्यत्वे धार्ष्ट्यमेव हि ॥ श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक ६**)**

तात्पर्य- लोग दूर के नदी और तालाबों को तो तीर्थ मानेंगे, लेकिन अपने पास रह रहे माता पिता की निंदा करेंगे। इसके इलावा सिर पर बड़े-बड़े बाल रखना ही सुंदरता मानी जायेगी और केवल पेट भरना ही लोगो का लक्ष्य होगा।

अनावृष्ट्या विनङ्क्ष्यन्ति दुर्भिक्षकरपीडिताः, शीतवातातपप्रावृड् हिमैरन्योन्यतः प्रजाः ॥ श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक१०

तात्पर्य - कलयुग में कभी बारिश नहीं होगी जिससे सूखा पड़ जाएगा। साथ ही कभी कड़ाके की सर्दी पड़ेगी तो कभी भीषण गर्मी हो जायेगी। तो कभी आंधी आएगी तो कभी बाढ़ आ जाएगी। इन परिस्तिथियों से लोग परेशान होंगे और नष्ट होते जाएंगे।

अनाढ्यतैव असाधुत्वे साधुत्वे दंभ एव तु , स्वीकार एव चोद्वाहे स्नानमेव प्रसाधनम् ॥ श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक ५**)**

तात्पर्य - इस युग में जिस व्यक्ति के पास धन नहीं होगा वो अधर्मी, अपवित्र और बेकार माना जाएगा। वही इस युग में विवाह दो लोगों के बीच बस एक समझौता होगा और लोग बस स्नान करके समझेंगे कि वो अंतरात्मा से शुद्ध हो गए हैं।

दाक्ष्यं कुटुंबभरणं यशोऽर्थे धर्मसेवनम्, एवं प्रजाभिर्दुष्टाभिः आकीर्णे क्षितिमण्डले।।

श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक७**)**

तात्पर्य - धर्म, कर्म के काम केवल लोगों के सामने अच्छा दिखने और दिखावे के लिए ही किए जायेंगे। पृथ्वी भ्रष्ट लोगों से भर जाएगी और लोग सत्ता हासिल करने के लिए एक दूसरे को आपस में मारेंगे।

आच्छिन्नदारद्रविणा यास्यन्ति गिरिकाननम् , शाकमूलामिषक्षौद्र फलपुष्पाष्टिभोजनाः ।। श्रीमद्भागवतपुराणम्/स्कन्धः १२/अध्यायः २, श्लोक९)

तात्पर्य - अकाल और अत्याधिक करों के कारण परेशान लोग घर छोड़ कर सड़कों और पहाड़ों पर रहने(वर्तमान में धरना, प्रदर्शन) को मजबूर हो जाएंगे। साथ ही पत्ते, जड़, मांस, जंगली शहद, फूल और बीज तक खाने को मजबूर हो जाएंगे।

उपरोक्त सभी श्लोकों में जो भविष्यवाणी की गई, वह वर्तमान में सभी के समक्ष दिखाई भी दे रही है । अतः जिन- जिन बुराइयों का वर्णन इन श्लोकों में किया गया है, मनुष्य को चाहिए कि उन सभी बुराई वाले व्यवहारों से अपने जीवन-कर्मो को दूर करें । उस बुराई को अपने जीवन में पनपने ना दे, क्योंकि न्याय व्यवस्था वहीं पर प्रयोग की जाती है ,जहां पर बुरे कर्म व व्यवहार के द्वारा जो परिणाम सामने आते हैं , समाज के लिए जो हितकारी नहीं है ,उन गलत कर्मों में लिप्त व्यक्तियों को दंड देने के लिए कुछ न्याय- नीति- नियमों का पालन करने से समाज में फिर से एक आदर्श व्यवस्था को स्थापित किया जा सके।

राष्ट्र की न्याय व्यवस्था व नेतृत्वकर्ता–

अब प्रश्न उठता है कि श्रेष्ठ-भारत निर्माण हेतु शास्त्रों में वर्णित न्याय व नैतिकता पूर्ण मानवीय मूल्यों की शिक्षा पर आधारित आचार-विचार को वर्तमान समाज में किस प्रकार प्रसारित करें?

न्याय व्यवस्था में राजा की महत्त्वपूर्ण भूमिका–

राजन्दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेतां, तेनाद्य वत्तमिव लोकममुं पुराण ।

तस्मिंश्च सम्यगनिडं परिपोष्यमाणे , नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः ।। (भृतहरि विरचित नीति शतक 46)

तात्पर्य - हे राजा ! अगर तुम पृथ्वी रुपी गाय को दुहना चाहते हो, तो प्रजा रुपी बछड़े का पालन-पोषण करो। यदि तुम प्रजा रुपी बछड़े का अच्छी तरह पालन-पोषण करोगे , तो पृथ्वी स्वर्गीय कल्पलता की तरह आपको नाना प्रकार के फल देगी।

श्रेष्ठ भारत निर्माण में न्याय व्यवस्था विषय पर महत्त्वपूर्ण शास्त्रोंक्त विचार-

शास्त्रों में धर्म के सिद्धांत पर न्याय प्रणाली को एक व्यवस्थित रूप में वर्णित किया गया है जिसमें व्यक्ति और समाज दोनों के कार्यों को नियंत्रित करने वाले न्याय और नैतिक कानूनों को विस्तृत रूप में वर्णित किया गया है। प्रायः इस प्रणाली को एक ऐसे सुनिश्चित साधन के रूप में ख्याति प्राप्त है, जिसमें न्याय स्थापित होने के साथ-साथ सभी व्यक्तियों के साथ निष्पक्ष और समान भावना के साथ व्यवहार में लाया जाता है।

कुछ विशेष बिंदु जो न्याय संबंधित नियमों को प्रदर्शित करते हुए श्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं; जैसे–

- यह एक ऐसी न्याय की जांच प्रक्रिया और संतुलन बनाए रखने की पद्धति है जिसमें राष्ट्र का मुख्य नेतृत्वकर्ता (राजा) न्याय के मामलों में अंतिम अधिकारी होता है।
- संपूर्ण राष्ट्र में सुव्यवस्था बनाए रखने और धार्मिक नियमों को क्रियान्वित करने के लिए भी राजा ही जिम्मेदार होता है।
- न्याय प्रशासन में सहायक सदस्यों न्यायाधीशों अधिकारियों को चयनित करने की जिम्मेदारी भी राजा के पास ही होती है।
- शास्त्रोक्त न्याय व्यवस्था में कर्म की अवधारणा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जो वास्तव में कारण और उसके प्रभाव के नियम को संदर्भित करते हैं अर्थात इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति अपने कर्मों के परिणामों के लिए स्वयं ही जिम्मेदार होते हैं।
- श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित न्याय प्रणाली का भी एकमात्र मुख्य लक्ष्य समाज में मनुष्य जाति का निष्पक्ष रुप से न्यायोचित पोषित व्यवहारिकता को बढ़ावा देना है अर्थात धर्म के सिद्धांतों पर चलते हुए ऐसे कर्मों का चयन व्यक्ति द्वारा किया जाए , जो श्रेष्ठता की ओर स्वयं और राष्ट्र का मार्ग प्रशस्त हो सके।

- न्याय प्रणाली में आध्यात्मिक आयाम के महत्त्व को भुलाया नहीं जा सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि व्यक्तियों को अपने मन और मस्तिष्क को शुद्ध व संतुष्ट रखने का प्रयास करना चाहिए साथ ही आत्म नियंत्रण, विनम्रता और दयामयी व्यवहार ,करुणा जैसे आध्यात्मिक गुणों को विकसित करना चाहिए।
- एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु न्याय व्यवस्था में है जिसे सभी युगों में महत्त्व मिलता रहा है। आध्यात्मिक आयाम यह भी सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होते हैं कि न्याय प्रणाली केवल दंड पर ही आधारित नहीं होनी चाहिए, अपितु व्यक्तियों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर भी बल दिया जाना चाहिए।

श्लोक–

सुखदुःखे समान कृत्वा लाभालाभौ जयजयौ,ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।। गीता **2.38||**

तात्पर्य – जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुःखको समान करके फिर युद्ध में लग जा। इस प्रकार युद्ध करने से तू पापको प्राप्त नहीं होगा।

अर्थात मनुष्य को अपने जीवन की प्रत्येक विषम परिस्थिति या चुनौती का मूल्यांकन आध्यात्मिक, बौद्धिक, तार्किक,मानसिक, नैतिक-भौतिक, रूढ़िवादी और सामाजिक रीति-रिवाज की दृष्टि से भी करना अतिआवश्यक है। ***इन सब के बिना या किसी भी अन्य विरोधाभास के बाद भी यदि किसी तरह का कोई कार्य करने में एक सत्य संकेत भी प्रस्तुत हो, परंतु हैरानी के साथ-साथ अत्यंत चिंतनीय विषय हो तो निश्चित जानो वह दिव्य मार्ग है जिस पर लोगों को कितना ही संघर्ष क्यों ना करना पड़े, परंतु चलने का प्रयास करना चाहिए। उदाहरण -*** जैसे अर्जुन की स्थिति कुरुक्षेत्र के मैदान में थी, परन्तु सभी स्तरों पर विचार करने के बाद भी श्रीकृष्ण का दिव्य मार्ग सांकेतिक रूप से अर्जुन को पूर्णतया समर्थन के साथ मिला जो आज भी हमारे सामने एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में अनंत कालीन अविस्मरणीय सत्य है।

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्,कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्।। श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय **2/21**

तात्पर्य – हे पार्थ! जो व्यक्ति यह जानता है कि आत्मा अविनाशी, अजन्मा, शाश्वत तथा अव्यय है, वह भला किसी को कैसे मार सकता है या मरवा सकता है?

- एक न्यायाधीश को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि वह न्यायशास्त्र के अनुसार ही दूसरे व्यक्ति पर हिंसा किये जाने का आदेश देता है।
- मनुष्यों के विधि-ग्रंथ मनुसंहिता में भी इसको उचित कहा गया है , क्योंकि हत्यारे को प्राणदण्ड देना चाहिए।
- राजा द्वारा हत्यारे को फाँसी का दण्ड एक प्रकार से लाभप्रद है।
- इसी प्रकार जब कृष्ण युद्ध करने का आदेश देते हैं तो यह समझना चाहिए कि यह हिंसा परम न्याय के लिए है और इस तरह अर्जुन को इस आदेश का पालन यह समझकर करना चाहिए कि कृष्ण के लिए किया गया युद्ध हिंसा नहीं है क्योंकि दूसरे शब्दों में आत्मा को मारा नहीं जा सकता। अतः न्याय हेतु तथाकथित हिंसा की अनुमति है।

निष्कर्ष–

किसी भी राष्ट्र का कल्याण तभी संभव होता है जब राष्ट्र का नेतृत्व ऐसे व्यक्ति के हाथ में हो जो धर्मात्मा और श्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण के लिए वचनबद्ध हो। इस विषय पर चाणक्य कहते हैं कि राजा के धर्मात्मा होने पर प्रजा भी धर्मात्मा, राजा के पापी होने पर प्रजा भी पापी,प्रजा तो राज्य चरित्र का ही अनुसरण किया करती है अर्थात जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा बन जाती है क्योंकि न्याय-अन्याय;नीति -अनीति आदि प्रत्येक बात राज चरित्र से ही प्रजा सीखती है।

राजा के सुचरित्र प्रभावित परिणाम राष्ट्र को सदैव लाभान्वित ही करते हैं क्योंकि प्रजा जनों के नीति संपन्न होने पर यदि किसी समय में, किसी विषम परिस्थितियोंवश यदि राजा का अभाव होता है ,तब भी राज्य सुव्यवस्थित ढंग से चलता रहता है। **(**चाणक्य सूत्राणि ,श्लोक **12)**

चाणक्य सूत्राणि में अनेकों ऐसे गुण रहस्य वर्णित किए गए हैं जो किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध हैं। अतः कोई भी राष्ट्र तब ही नीति परायण रह सकता है जबकि उसका राज्य तंत्र पूर्णतया नीति युक्त हो यदि राजतंत्र में नीति-नियमों का प्रयोग नहीं हो रहा होता है तो लोक में नीति नाम का कोई विचार ही नहीं रहता है और ऐसी स्थिति में श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण असंभव है।

मनु, नारद, इंद्र ,बृहस्पति ,भारद्वाज, विशालाक्ष, भीष्म, पराशर, विदुर आदि पूर्वाचार्यों द्वारा **धर्म, अर्थ तथा काम** इन तीनों विषयों को अबध्यघातक मानते हुए, तीनों पर अंकुश रखने के लिए शास्त्रों की रचना की और इन सब के पश्चात आचार्य विष्णुगुप्त ने इन सभी पूर्वाचार्यों के अनुभव सार को लेकर एक नीति शास्त्र बनाया उसी का नाम कौटिल्य अर्थशास्त्र है।

संदर्भ सूची-

- जागृत भारत श्रेष्ठ भारत– डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, प्रो.अरुण तिवारी।
- मेरा देश बदल रहा है – डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम।
- भारत **2020** और उसके बाद–डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ,वाई. एस. राजन।
- समर्थ भारत हिंदी संस्करण **2020, 2021**
- राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान - मोहन राव भागवत।
- परिवर्तनशील समाज के लिए शाश्वत मूल्य खंड **-1-** स्वामी रंगनाथानंद।
- पाखंड मुक्त भारत – पंकज के सिंह।
- रहस्यमयी गीता की अनजानी रहस्यमय राज– डॉ.एम.एस. योगी
- चाणक्यसूत्राणि– स्वर्गीय श्री रामावतार विद्या भास्कर– बुद्धि सेवाश्रम , रतनगढ़ **(**जिला बिजनौर**1946)**
- श्रीमद्भगवद्गीता के विश्वजनिन निर्देश– स्वामी बुधानंद, अनुवादक - श्री ज्ञानेश्वर भट्ट ,रामकृष्ण मठ नागपुर।
- भृतहरि नीति शतकम् -निशीथ रंजन

नीलिमा[1] edubasefoundation9810227856@gmail.com

डॉ**O** ब्रजलता शर्मा[2] brijlata1976@gmail.com